International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 12, December 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शहरी एवं ग्रामीण परिवेश में कॉलेज में पढ़ने वाले खिलाड़ीयों के व्यक्तित्व का अध्ययन

DR. BINDA RAM
Associate Professor
Jiwachh College, Motipur
B.R.A.Bihar University, Muzaffarpur

SMT. SANJU KUMARI
M.A. IN L.S.W.
MAGADH UNIVERSITY

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण कुश्ती खिलाड़ियों के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए न्यादर्श हेतु 50 खिलाड़ियो का चयन किया गया। इनमे से 30 खिलाड़ी शहरी एवं 20 खिलाड़ी ग्रामिण परिवेश से थे। व्यक्तिव मावन हेतु डाँ. आर. ए. सिंह द्वारा निर्मित अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन से यह प्राप्त हुआ कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी उभयमुखी व्यक्तित्व के होते है।

व्यक्तित्व एक आन्तरिक मनोदैहिक स्थिति है जो व्यक्ति को प्रतिक्रिया करने की अनुज्ञा देती है, विशेष संवेगों के अनुभव प्राप्त करती है। एवं कार्य को पूर्ण रूप से करने के लिए अभिप्रेरित करती है। दूसरे अर्थ में व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति में जो भी कार्य करता है, उसका प्रक्रिया ही व्यक्तित्व है। मनोविज्ञानिक मन के अनुसार व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गठन, व्यवहार के तरीकों, रूचियों दृष्टिकोणों, क्षमताओं और तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है। यह जन्ताजात और अर्जित प्रवृत्तियों का योग पहचाना जा सकता है। कुछ भावुक तथा विचारों की अभिवृद्धि स्पष्टता से करते है। कुछ व्यक्ति आत्मविश्वासी तो कुछ झागड़ालु किस्म के होते है। कुछ व्यक्ति प्रसन्नमुख रहते है, तो कुछ साहसी होते हैं। मिलनसार होते है या एकान्तिक होते हैं। कुछ व्यक्ति दूसरों के साथ जरूरी घुलमिल जाते है तो कुछ किसी से बात करना पसन्द नहीं करते हैं।

इन सभी गुणों के प्रकटीकरण से व्यक्ति का व्यक्तिव झलकता है। अनुकूल गुण अन्य व्यक्तियों को आकर्षित करते हैं तथा उदासीन अथवा प्रतिकूल गुण वाले व्यक्ति से अन्य दूरी बनाए रखने का प्रयास करते हैं। यह व्यक्ति का व्यक्तित्व ही है जिसके कारण वह समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। मनोवैज्ञानिक जूंग ने मनुष्य की मानसिक प्रकृति और उसके व्यक्तित्व के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया और वे इस निष्कर्ष पहुँचे कि मनुष्य मानसिक प्रकृति और उसके व्यक्तित्व के गुणों के बीच गहरा सम्बन्ध देता है। उनहोने मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के दो प्रकार बतलाए– एक अन्तमुखी और दूसरा बर्हिमुखी। अन्तमुखी व्यक्ति एकान्त प्रिय होते हैं दूसरो से मिलना–जुलना कम पसन्द करते हैं और कुछ ही लोगों में मित्रता बनाते है। ये प्रायः रूढ़िवादी प्रकृति के होते हैं

और पुराने रीति–रिवाजों को आदर देते है। बर्हिमुखी व्यक्ति सामाजिक प्रवृत्ति के होते है। ये अन्य व्यक्तियों से मिलना–जुलना पसन्द करते हैं और समाज के लिए उपयोगी होते हैं। ये आदर्शवादी कम और यथार्थवादी अधिक होते है। इन्हें खिलाड़ियों में दोनों प्रकार के व्यक्तित्व देखे जा सकते हैं।

कुश्ती खिलाड़ी अन्य विद्यार्थीयों एवं खिलाड़ियों से अपनी अलग से पहचान बनाने का प्रसास करते हैं। शारीरिक शाष्ठव इस कार्य में सहायता प्रदान करता है। यदि इसकी शक्ति का एवं योग्यताओं का अपयोग समाजिक सन्दर्भो में किया जाए तो खेल के साथ ही अन्य समूहो में भी वे अपना योगदान दे सकते है। प्रायः देखा जाता है कि शहरी परिवेश में पले बढ़े खिलाड़ी समाजिक रूप से अधिक सक्रिय तो दिखाई देते है, दूसरों पर प्रभुत्व जमाना भी उन्हें रास आता है, इनके इर्द–गिर्द रहने वाले विद्यार्थीयों के लिए ये अहित नहीं कर सकते है। ग्रामीण परिवेश के इन खिलाड़ियों को अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी प्रतिभा का मापन कर इनकी योग्यताओं को समाजोपयोगी बनाया जा सकता है ये खिलाड़ी अन्य व्यक्तियों से अधिक लोकप्रिय बन सकते है, यदि इन्हें सच्चा मार्गदर्शक मिल जाए तो इनकी लोकप्रियता एवं साहस को लिए आदर्शमूलक बनाया जा सकता है। इन्हीं तथ्यों को अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का अध्ययन करने का विचार किया।

समस्था कथनः

‘शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के कॉलेज में पढ़ने वाले कुश्ती खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अध्ययन।’’

शोध के उद्देश्यः–

शोधार्थी ने निम्न उद्देश्यों का चयन किया :–

1. कॉलेज में पढ़ने वाले कुश्ती खिलाड़ीयों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. शहरी परिवेश में पढ़ने वाले कुश्ती खिलाड़ीयों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण परिवेश में पढ़ने वाले कुश्ती खिलाड़ीयों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
4. शहरी एवं ग्रामीण में पढ़ने वाले कुश्ती खिलाड़ीयों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाः–

शहरी एवं परिवेश में पढ़ने वाले कुश्ती खिलाड़ियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमनः–

प्रस्तुत अध्ययन पटना शहर के बी. एन. कॉलेज में पढ़ने वाले शहरी एवं परिवेश में आने वाले कुश्ती खिलाड़ीयों तक ही सीमित है।

व्यक्तित्वः–

व्यक्तित्व, व्यक्ति के अन्दर उन मनोशारीरिक संस्थानों का गत्यामक संगठन से तात्पर्य लचीलेपन से है, मनोशारीरिक संस्थानों से तात्पर्य मन और अनूठे समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति के कुछ अपने तरीके से व्यवहार करने से है।

कुछ विद्वान व्यक्ति के व्यक्तित्व से तात्पर्य उसकी समस्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों एवं गुणों से लेते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों में उसके व्यवहार को निश्चित एवं निर्देशित करता है। व्यक्तित्व विभिन्न शक्तियों एवं गुणों का योग नहीं, समुच्चय है, एक विशिष्ट प्रकार की विशिष्ट रचना है। व्यक्तित्व से तात्पर्य उसके स्वयं के पूर्ण रूप से होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में व्यक्तित्व से तात्पर्य के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी से है।

न्यादर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु शोधकर्ता ने पटना शहर के बी. एन. कॉलेज (शारीरिक शिक्षा) के प्रथम एवं द्वितिय वर्ष में पढ़ने वाले ऐसे 50 विद्यार्थियों का चयन किया जिन्होंने कुश्ती को खेल के रूप प्रथम वरीयता दी। इन विद्यार्थियों में से 30 विद्यार्थि शहरी एवं 20 विद्यार्थि ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित थे।

उपकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए उपरोक्त आंकड़े प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने आर. ए. सिंह द्वारा निर्मित अन्तमुखी–बहिर्मुखी परीक्षण का उपयोग किया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन, सारणी में प्रस्तुत किए गए हैः–

सारणी :–1

शहरी एवं ग्रामीण खिलाड़ियों के सांखियकीय मान

परिवेश	चर	छ	मध्यमान	मानक विचलन	परिणाम
शहरी	प्रथम वर्ष	10	178.25	16.23	उभयमुखी
	द्वितीय वर्ष	20	262.17	19.75	सामान्य बहिर्मुखी
ग्रामीण	प्रथम वर्ष	10	113.35	15.27	स्पष्ट अन्तर्मुखी
	द्वितीय वर्ष	10	173.23	20.63	उभयमुखी

निष्कर्ष एवं व्याख्या :–

सारणी 1 से शहरी क्षेत्र से आने वाले प्रथम वर्ष में अध्ययनरत कुश्ती खिलाड़ीयों का व्यक्तितव परीक्षण पर प्राप्त पाप्तांकों का मध्यमान 178.25 है। स्पष्ट होता है कि प्रकृति कभी अन्तर्मुखी एवं कभी बहिर्मुखी है अर्थात् शहरी परिवश से आने वाले द्वितीय वर्ष के कुश्ती खिलाड़ी का व्यक्तित्व से आने वाले ये खिलाड़ी अन्य विद्यार्थीयों से जल्दी सम्बन्ध बना लेते हैं तथा उनकी सहायता के लिए तत्पर रहते हैं।

सारणी 1 से ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले प्रथम वर्ष में अध्ययननरत कुश्ती खिलाड़ियो का व्यक्तित्व परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 113.35 है। यह मान अन्तर्मुखी व्यक्तित्व उभयमुखी व्यक्तित्व उभयमुखी है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम वर्ष के खिलाड़ी द्वितीय वर्ष में आकर अन्तर्मुखी हो जाते है। परिवेश एवं महाविधलयीय पर्यावरण का असर इनके व्यक्तित्व पर पड़ता दिखाई देता है।

संदर्भ साहित्य :–

Anand, S.P. (1989):	"Mental Health of High School Students", Indian Education Renew 24(2).
Best, J.W.	(1983. "Research in Education" New Delhi Prentice Hall of India Pvt)
Cocher, W.G. (1963)	"Sampling Technique" Boday Publishing House.
Eysenck, H.J. (1947)	Dimensions of Personality", Londan Roultage and Kegan Pual.
Good, Carter V. & Bar (1945)	"Method of Research Educational Psychological Sociological", New York: Appleton Century inc. P 76
ढोढियाल एस. एन. एवं. पाठक, ए. बी. (1982)	''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र '' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
सुखिया एस. पी. बी. मेहरोत्रा (1984)	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
शर्मा, आर.ए. (1996)	''शिक्षा तथा मनोविज्ञान में प्रारंभिक सांख्यिकी।''
बेस्ट जॉन डब्लू (1995)	''शिक्षा अनुसंधन विधि एवं विश्लेषण'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।